अपने भीतर के साधु को जगाइए

डॉ. मुकेश नायक

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने जीवन के गहरे से गहरे सत्य को भी सरल शब्दों में व्यक्त किया है. ऐसा ही एक प्रसिद्ध दोहा है

'सोवा साधु जगाइए, करे नाम का जाप. यह तीनों सोते भले, सकित सिंह और साँप ॥'

पहली दृष्टि में यह दोहा किसी साधु, सिंह और साँप की बात करता प्रतीत होता है, लेकिन इसका वास्तविक संदेश मनुष्य के भीतर चलने वाले संघर्षों से जुड़ा है. यह केवल आध्यात्मिक उपदेश नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक व्यावहारिक कला है.

जीवन में जब कठिन परिस्थितियाँ आती हैं, तब न धन काम आता है और न ही पद-प्रतिष्ठा. उस समय हमारा विवेक ही हमारा सबसे बड़ा सहारा बनता है. यही विवेक हमारे भीतर का 'साधु' है. जब यह जागृत रहता है, तब हम सही-गलत का निर्णय कर पाते हैं, धैर्य बनाए रखते हैं और सत्य के मार्ग पर चलते हैं. लेकिन जैसे ही यह सो जाता है, क्रोध, अहंकार और मोह हमारे निर्णयों पर हावी हो जाते हैं. इस दोहे का पहला संदेश यही है कि हमें अपने भीतर के साधु अर्थात सद्बुद्धि, करुणा, सत्यनिष्ठा और आत्मसंयम को हमेशा जागृत रखना चाहिए. यही गुण मनुष्य को श्रेष्ठ बनाते हैं.

दोहा का दूसरा भाग और भी गहरा अर्थ समेटे हुए है. यहाँ सिंह और साँप बाहरी जीव नहीं, बल्कि हमारे भीतर छिपी नकारात्मक प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं.

सिंह अहंकार का प्रतीक है. जैसे ही व्यक्ति स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगता है, उसके पतन की शुरुआत हो जाती है. अहंकार रिश्तों को कमजोर करता है, सम्मान को कम करता है और सफलता को भी टिकाऊ नहीं रहने देता. इसलिए विनम्रता कमजोरी नहीं, बल्कि व्यक्तित्व की सबसे बड़ी शक्ति है.

वहीं साँप क्रोध, ईर्ष्या और द्वेष का प्रतीक है. एक क्षण का अनियंत्रित क्रोध वर्षों पुराने रिश्तों को तोड़ सकता है. अधिकांश संबंध इसलिए नहीं टूटते कि लोग बुरे होते हैं, बल्कि इसलिए टूटते हैं क्योंकि मन में जमा हुआ द्वेष प्रेम पर भारी पड़ जाता है. यदि हम अपने भीतर के इस 'साँप' को सोए रहने दें, तो जीवन में अनेक विवाद स्वत: समाप्त हो सकते हैं.

आज का समय प्रतिस्पर्धा का है. हर व्यक्ति अधिक धन, बड़ा पद, अधिक प्रसिद्धि और प्रभाव चाहता है. लेकिन इस दौड़ में हम स्वयं को सँवारना भूल जाते हैं. हम अपने मोबाइल फोन को रोज़ चार्ज करते हैं, शरीर के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं, लेकिन मन और चरित्र को सकारात्मक विचारों से भरने का समय नहीं निकालते.

दिन की शुरुआत पूरे दिन की दिशा तय करती है. यदि सुबह शिकायतों से आरम्भ होती है, तो दिन तनाव और निराशा में बीतता है. लेकिन यदि दिन कृतज्ञता, प्रार्थना, प्रेरणादायक विचारों, माता-पिता और गुरुजनों के प्रति सम्मान तथा स्वयं को बेहतर बनाने के संकल्प से शुरू हो, तो जीवन का दृष्टिकोण ही बदलने लगता है. वास्तविक सफलता केवल तेज़ दौड़ने वालों को नहीं मिलती, बल्कि उन्हें भी मिलती है जो अपने मन पर विजय प्राप्त कर लेते हैं. जो व्यक्ति अपने क्रोध को शांत करना, अहंकार को नियंत्रित करना और ईर्ष्या को प्रेरणा में बदलना सीख लेता है, वह ऐसी सफलता प्राप्त करता है जिसे कोई बाहरी प्रतियोगिता छीन नहीं सकती. मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष किसी दूसरे व्यक्ति से नहीं, बल्कि स्वयं से होता है. हर सुबह हमारे भीतर दो आवाज़ें उठती हैं एक हमें आलस्य और टालमटोल की ओर ले जाती है, जबकि दूसरी कर्म, अनुशासन और निरंतर प्रयास का आह्वान करती है. जो व्यक्ति दूसरी आवाज़ को सुनता है, वही अपने भाग्य को बदलने की क्षमता विकसित करता है.

> यही इस प्राचीन दोहे की सबसे बड़ी सीख है कि हमारे भीतर की हर प्रवृत्ति को जगाना आवश्यक नहीं है. हमें दया, सत्य, परिश्रम, विनम्रता और मानवता को प्रतिदिन जागृत करना चाहिए, जबकि अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या और द्वेष जैसे दोषों को सोए रहने देना ही बुद्धिमानी है. अंततः किसी मनुष्य की महानता उसके पद, शक्ति या संपत्ति से नहीं, बल्कि उसके चरित्र से मापी जाती है. जिस दिन हम अपने भीतर के साधु को जगा लेते हैं और सिंह तथा साँप रूपी अहंकार और क्रोध को सुलाए रखना सीख जाते हैं, उसी दिन से हमारे जीवन में वास्तविक परिवर्तन का आरम्भ होता है.

क्लास by बड़े भाई

हार और जीत इस तरह साथ रह सकते हैं

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, चलिए विचार करें कि हमें कब किसी की सफलता खलती है और कब हमारी हार सबसे ज्यादा पीड़ा देती है.. छोटे भाई, हम जब सफल होते हैं तो हम लोगों से अपनी बड़ी तारीफ़, बड़ी क़द्र, बड़ा सम्मान चाहते हैं.. लेकिन जब कोई और सफल होता है तो हम कुछ और हो जाते हैं.. हम सबकी यही प्रवृत्ति अपनों से दूर कर रही है..इसे कैसे निकलें..आज हम इसी पर बात करेंगे..

छोटे भाई, इसके लिए सबसे पहले हार जीत को किसी भी कार्य का निश्चित परिणाम समझिये.. देखिये , परिणाम दो ही होता है या तो जीतना या तो हारना..ऐसा कभी नही होता कि आप जो खेल खेलें वहां सिर्फ जीत हो.. वहां कोई या आप हार भी सकते हैं.. जीत और हार दोंनो के लिए स्वयं को हमेशा तैयार रखिये..जीत के लिए तालियाँ बजाइए चाहे आपकी हो या किसी और की.. इससे आपके भीतर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है.. मन मलिन या किसी ईर्ष्य भाव से दूषित होने से बच जाता है.. इसी तरह जब आप जीतें तो जो नही जीत पायें उनसे नम्र रहिये..क्योंकि उनके सपने टूटे होते हैं, उनके प्रयास विफल हुए होते हैं..वो थोडा निराश होते हैं..आपके अच्छे व्यव्हार से उन्हें हौसला मिलेगा और प्रेरणा मिलेगी.. वो आपकी जीत पर खुलकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर पाएंगे.

कहना यह चाहता हूँ कि विजेता और पराजित यदि दोंनो एक दूसरे की भावनाओं की क़द्र करें तो विजेता को जीत की असली खुशी मिलेगी और जो पराजित होगा, उसको ढाढस मिलेगा..और आप दोनों, दो अलग परिणामों के साथ भी एक अच्छे साथी रहेंगे.. एक दूसरे की आगे की यात्रा में साथी बनेंगे..क्योंकि परिणाम स्थायी कभी नही हैं आज आप विजेता है कल यह गेंद किसी और के पाले में भी जा सकती है.. जब तक यह हमें याद रहेगा.. हमेशा अपनापन रहेगा.. बस यही कहना था..धन्यवाद

कहानी

अपने - अपने योद्धा

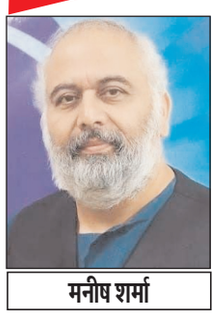

मनीष शर्मा

हमेशा की तरह मोहल्ले बजरंगपुरे का बाज़ार गुलज़ार था. शाम का वक्त था. शाम होने से पहले ही मोहल्ले के ओटलों पे सजी दुकानें अपनी जगह जमाने लगती थीं. सड़क पर छिड़काव हो जाता था, दुकानों के बाहर अवांछित ठेलेवालों को आगे बढ़ाने का उपक्रम शुरू होता, टेबलें इत्यादि सड़क तक आ जातीं.

अब ये मोहल्ला बजरंगपुर शाम के वक्त एक खाऊ गली के रूप में तब्दील हो चुका है. शाम को तरह-तरह की दुकानें सज जाती हैं. खासतौर पर जलेबियों की दुकान यहाँ बहुतायत में है. और जब जलेबी है, तो गराडू भी है. और भी कुछ खानपान की दुकानें आसपास हैं, कुछ गजक के ठेले हो जाते हैं. और बड़ी मिठाइयों की दुकान तो खैर उस मोहल्ले में पहले से ही स्थापित थीं. उस मोहल्ले में बड़ा नाम था माखन हलवाई का, जिनकी मिठाइयों के बड़े चर्चे होते थे. उसी मोहल्ले के अपने पुश्तैनी घर में वो मिठाइयाँ बनाते, पहले दुकान वहीं लगाते थे, फिर जवाहर चौक में उनकी दुकान लगने लगी. उन्हीं के यहाँ से निकले हुए कारीगर ने भी मोहल्ले में अपनी दुकान खोल ली. पुराने समय लाला जी की एक दुकान हुआ करती थी—चाय-समोसों के साथ मिठाइयाँ भी वो रखते थे. तो यूँ मोहल्ला बजरंगपुरा मिठाइयों के लिए तो बड़ा आबाद था. अब जलेबियों ने उसे और गुलज़ार कर दिया. नुकसान बस इतना हुआ कि ओटलों की बैठकियाँ इस कारण बंद हो गईं. बच्चों का सड़कों पर स्वतंत्र रूप से खेलना बंद हो गया. नई पीढ़ी के बच्चे तो साइकिल तक चलाना सीख नहीं पाए.

हाँ, चौराहे के आसपास ज़रूर कुछ गहमा-गहमी होती है, खासतौर पर चाय की गुमटी और पान की दुकानों पर. और वहाँ चर्चा का मुद्दा राष्ट्रीय भी हो सकता है और अंतर्राष्ट्रीय भी. यानी लोकल से ग्लोबल की पूरी रेंज वहाँ डिसकस होती है. फिलहाल चर्चा का विषय युद्ध है—वो युद्ध, जो तकरीबन आसमान में लड़ा जा रहा है, मिसाइलों के बूते लड़ा जा रहा है, लेकिन उस युद्ध में भी पक्ष और विपक्ष तय हो गए हैं. उस युद्ध में भी लोगों की रुचि और उत्साह देखने लायक है. लगातार चर्चाएँ इन दिनों उस युद्ध की, पेट्रोल की कीमतों की, गैस की किल्लत की और शेयर बाजार की चौराहों पर होती रहती हैं. खैर, तो बाजार गुलज़ार हो रहा है, दुकानें सज रही हैं. दुकानों के ऊपर लट्टू लटके हुए हैं और कुछ दुकानदारों ने तो हेलोजन भी लगा लिए हैं. मोटी धूपबत्ती वो ज़रूर जला के रखते हैं, जिससे सुगंध दूर से आती है और मक्खियाँ-मच्छर भी नहीं आ पाते. कई दुकानों के बाहर ग्राहक जमा हैं, क्योंकि मालवे में खासतौर पे जलेबियाँ अगर हों, तो गर्म. अपने सामने निकली हुई अपनी पसंद की जलेबियाँ, बीच-बीच में कारीगर को सलाह भी देना कि भैया, ज़रा पतली निकालना, कड़क

करना, कोई और कुछ कहता और अपनी पसंद की जलेबियों के इंतज़ार में ग्राहक खड़े हुए हैं. स्कूटर टिके हुए हैं, कुछ परिवार हैं, महिलाएँ स्कूटर के पास इंतज़ार कर रही हैं, बच्चे स्कूटर पर बैठे हैं, कुछ साइकिल टिका के आसपास खड़े हैं. कुल मिलाकर यातायात अस्त-व्यस्त है. तभी अचानक व्यापारियों की निगाहों में कुछ बेचैनी-सी नज़र आती है, सतर्कता बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है.

स्थिति कुछ तनावग्रस्त-सी नजर आने लगती है. ग्राहक कुछ समझ नहीं पाते और दुकानदार अपने सहयोगियों को निगाहों से ढूँढने लगते हैं. उन्हें चिंता अपनी जलती भट्ठियों पर रखे हुए घी-तेल के कड़ावों की है, चाशनी की है. और अचानक पूरे बाजार का माजरा कुछ बदल-सा जाता है. जिनके बच्चे स्कूटर पर बैठे हुए हैं, उन्होंने बच्चों को गोद में उठा लिया है. महिलाएँ सड़क किनारे हो गई हैं. सब कुछ अचानक थम-सा गया, लेकिन पूरी अस्त-व्यस्तता के साथ ही. हुआ यूँ है कि नोवेल्टी चौराहे की तरफ से एक साँड़ आ रहा है. उसे किसी धार्मिक व्यक्ति ने छोड़ा हुआ था और नोवेल्टी चौराहे के भोलेनाथ मधुशाला के जो मालिक हैं, वो बड़े शंकर भक्त हैं. भांग पीने के बाद थोड़ा गाँजे का भी उपयोग करते हैं और नंदी बाबा का पूरा ध्यान रखते हैं. तो वो साँड़ गन्ने के रस की दुकान पर रस निकले हुए, लेकिन फिर भी काफी रसीले गन्नों का स्वाद लेकर काफी विशालकाय हो चुका है. और ऐसे ही एक साँड़ शांतिपुरे की तरफ से कहीं आ रहा है और वो भी कद-काठी में कहीं कमजोर नहीं है, वहाँ के पहलवानों द्वारा पोषित है. आज इनका आमना-सामना है और ये सबको पता है कि ये दोनों एक-दूसरे को कतई पसंद नहीं करते. इसलिए पहले से ही स्थिति को भाँपना व्यापारियों ने शुरू कर दिया था.

कई व्यापारी पहल करके पानी की बाल्टियाँ लाते हैं, इन्हें वापस अपने रास्ते मोड़ने की नाकाम कोशिश करते हैं. लेकिन जो होना था, वो तो हुआ ही और इन दोनों ने अपने माथे भिड़ा लिए. थोड़ी देर तक तो एक-दूसरे को धकेलने की ज़ोर-आज़माइश चलती रही, अपने अगले पैर से मिट्टी को पीछे उछालने का उपक्रम चलता रहा. लेकिन अचानक एक साँड़ ने जब दूसरे को दो-चार कदम पीछे धकेल दिया, तो फिर असली खेल शुरू हुआ. और जब खेल शुरू हो ही गया—जी हाँ, साँड़ों की लड़ाई का तो दुकानवालों ने अपने सामान को सुरक्षित किया, लोग ओटलों पर चढ़ गए. दोनों तरफ का ट्रैफिक जहाँ का तहाँ थम गया.कभी कोई साँड़ किसी को आगे धकेल देता, कभी कोई दूसरा अगले को पीछे धकेल देता. थोड़ी देर तक ये चलता रहा, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से वो जो अतिशय तनाव का और असुरक्षा का माहौल बना था, वो माहौल छँट गया और जनमानस एक अजीब-सी ऊर्जा से आविष्ट हो गया है, जैसे इस लड़ाई में उसकी रुचि जाग गई. अब उसका ध्यान साँड़ों की लड़ाई पर है. साँड़ों के पीछे जो लोग ठहरे थे, एक तरह से वो अपने-अपने साँड़ों के पक्षधर हो गए हैं और अवचेतन में दमित हिंसा उन साँड़ों के माध्यम से प्रकट होने लगी. जो साँड़ अगले को धकेल देता, वहाँ से हो-हो की आवाज़ें आने लगतीं, तालियाँ तक पिटने लगतीं. आश्चर्यजनक रूप से इस लड़ाई में लोगों ने अपने-अपने साँड़ चुन लिए, उनके पीछे समर्थन में खड़े हो गए और उस लड़ाई का पूरा मज़ा लेने लगे. कई तो अब उस लड़ाई को उकसाने के प्रयास में लगे थे, और देखते-ही-देखते वह दृश्य, जो अभी कुछ देर पहले तक एक स्थानीय अव्यवस्था भर था, एक सामूहिक अनुभव में बदलने लगा. सड़क भीड़ के भीतर दबे हुए मनोभावों का मंच बन चुकी थी.

धीरे-धीरे यह दृश्य जैसे किसी बड़े परिदृश्य का लघुरूप बनने लगा—जैसे दूर कहीं दो देशों के बीच तनाव बढ़ता है; पहले खबर आती है, फिर अटकलें, फिर बयान, फिर सीमाओं पर हलचल और फिर एक दिन अचानक टकराव. यहाँ भी तो वैसा ही था. जो लोग अभी कुछ क्षण पहले अपने बच्चों को बचाने के लिए घबराए हुए थे, वही अब तमाशबीन बन चुके थे. डर की जगह रोमांच ने ले ली थी. जब खतरा नियंत्रण में महसूस होने लगे, तो वही खतरा मनोरंजन बन जाता है. भीड़ का मन व्यक्तिगत नहीं रह जाता. हर तमाशबीन अपने भीतर की दबी हुई आक्रामकता और कुंठाएँ इन साँड़ों में देख रहा था. लड़ाई बीच बाज़ार के साँड़ों की हो या दो मुल्कों की, लोगों की रुचि, लोगों का उत्साह और जीतने वाले के पक्ष में उनकी हुंकार में अंतर कहाँ होता है !कुछ देर तमाशे के बाद सब सामान्य हो गया. जैसे कुछ हुआ ही न हो. लेकिन सच तो यह था कि उस शाम बजरंगपुरे की सड़क पर सिर्फ दो साँड़ों की ताकत नहीं टकराई थी, भीड़ के भीतर दबा हुआ आदिम मन भी बाहर आ गया था. सभ्यता की परत बहुत पतली है. थोड़ा-सा रोमांच, थोड़ा-सा भय और थोड़ा-सा सामूहिक उन्माद और मनुष्य फिर वही हो जाता है, जिससे बचने के लिए उसने सभ्यता बनाई थी.

कविता

देवेन्द्रसिंह सिसौदिया

वक्त

जीवन में
अच्छे लोगों से मिले,
अच्छा वक्त गुज़रा.
जब
बुरा वक्त आया
तो बुरे लोग सामने आए,
लेकिन
उनमें से भी
अच्छा खोज लिया,
और
बुरे को बिसार कर
उनकी अच्छाइयों से
जीवन को निखार लिया.

नारायण श्रीवास्तव

कविता की चार पंक्तियों से....

मैं आर्द्रता के
उन कणों को
खोजता हूँ
जो वैसाख की
तीक्ष्ण धूप में भी
मेंढ़ों पर उगे
पौधों को
सिंचित करते हैं.

मैं आँच की
उस गहरी तीव्रता को
ढूंढता हूँ
जो भरती रहती है
फूलों में
अन्न के दाने.

मैं टोह लेने की
करता रहता हूँ
पूरी कोशिश
कि वायु कैसे
बदलती है
अंकुरों के रंग.

हथेली फैलाने पर
आकाश बैठ जाता है
भाग्य रेखा पर
और फैलता जाता है
आँखों के पार तक
अपने में
अनगिनत ध्वनियाँ -
प्रतिध्वनियाँ समाए
वही सुनने का
करता हूँ यत्न.

शेष बचे
सँकरे रास्तों पर
पद चिन्हों के आकार
बदलने के अज्ञात कारण
और जानना चाहता हूँ
धरती पर
अकस्मात अदृश होती
पगडंडियों के गंतव्य

लघुकथा

बिकता भविष्य

श्रद्धा जलज घाटे

अस्पताल के आईसीयू में ईसीजी मशीन की टिक-टिक गूंज रही थी. पिता मास्टर दीनानाथजी की नाजुक हालत का सुनकर, उस शाम सिर्फ पांच मिनट की मोहलत लेकर मनीषा अंदर आई.

आँखों में आंसू थे और हाथों में हथकड़ियाँ. मास्टर जी की नाक में ऑक्सीजन की नली थी. उन्होंने भारी पलकें खोलीं और भर्राई आवाज में बोले, आ गई तू...

बाबूजी, मुझे माफ... उसकी आवाज लड़खड़ा गई. रुक!

उन्होंने कंपकपाते हाथ से उसे टोक दिया, कल पुलिस तुझे ले जा रही थी, तब मोहल्ले वालों की नज़रें मुझे जिंदा लाश बना गईं. छाती का दर्द यहां ले आया. तीस साल मैंने बच्चों को सिर्फ ईमानदारी सिखाई... पर आज सुकून से आखिरी सांस भी न ले सकूँगा.

मनीषा का चेहरा सफ़ेद पड़ गया, बाबूजी, कोचिंग का कर्ज और रातों-रात अमीर बनने की अंधी सनक ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा.

पैसा? मास्टर जी को खांसी उठी, गुरु की साख शिष्यों के चरित्र से होती है. तूने पेपर बेचकर हज़ारों बच्चों का भविष्य बेच दिया. क्या पल भर भी चैन मिला?

नहीं, बाबूजी... वह फूट-फूटकर रो पड़ी. उनके पैर पकड़ लिए.

बाबूजी के आशीष देते हाथ हवा में ही ठहर गए. सहसा मशीन की लंबी आवाज़ सुनकर डॉक्टर दौड़े. सब खत्म हो चुका था. मनीषा पथराई आँखों से बाहर निकली. वेन में लगे शीशे पर उसकी नजर गई -खुद के साथ लाखों बच्चों का अक्स दिखा. तभी पुलिस वैन का पिछला दरवाज़ा खटाक से बंद हुआ और सन्नाटा पसर गया.

मानवीय संवेदनाओं का दस्तावेज नदी की गीली आँखें

सुमन सिंह

चित्रा सिंह की कविताएँ पहली बार मैंने 2012 में पढ़ी थीं जब उनका संग्रह 'रेत में उगाए हैं फूल' प्रकाशित हुआ था. तब से लेकर अब तक उनके दो और संग्रह-धूप के नन्हे पाँव (2022)आ चुका है. उनकी कविताओं की निजता और सरलता ने मुझे तुरंत बाँध लिया.उन्होंने हमेशा मुझे एक अनूठे संसार में प्रवेश कराया है जहाँ हर शब्द, हर पंक्ति,अपने भीतर एक क्षण,एक अनुभव एक मूड समेटे हुए है.उनके पहले संग्रह रेत में उगाए हैं फूल से लेकर प्रकाशित हालिया संग्रह 'नदी की गीली आँखें' तक की कविताएँ हमें जीवन की संघर्षभरी, प्रेमपूर्ण और सूक्ष्म मनोभावों की यात्रा पर ले जाती हैं.

चित्रा की कविताओं की ख़ास विशेषता यह है कि इन कविताओं में भारी भरकम शब्दों का न तो आडंबर है न ही उनके अर्थों को समझने में कहीं कोई जटिलता.वे बड़े सीधे-साधे ढंग से अपनी बात कहते हुए उन बातों की गहराई का बोध कराती हैं और जीवन के छोटे बड़े क्षणों को एक नया अर्थ देती हुई सी लगती हैं. उन्ही के शब्दों में कहूँ तो-कविता हृदय की भाषा है,उसका अपने मन

पुस्तक चर्चा

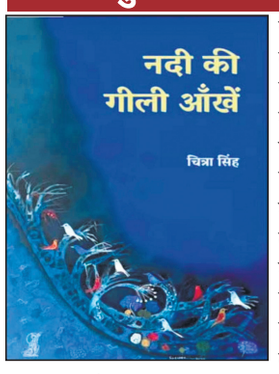

है. ये कविताएँ कभी स्त्री मन की उदासी की परतों को उघाड़ती हैं तो कभी उम्मीद की किरणों को सहेजती सी लगती हैं. कह सकते हैं कि चित्रा की कविताएँ जीवन को समझने की एक आजाद स्वीकृति है. इन कविताओं में रिश्तों की टूटन,जीवन की रिक्तता और उससे उपजा संघर्ष ही किसी रचना का रूप ले लेता है.

यहाँ हर कविता किसी ताजे फूल की सी खिलती है और पाठक को अपने नए रंग और खुशबू से बाँध लेती है.चित्रा सिंह की कविताएँ इस बात का प्रमाण भी हैं कि कविता किसी एक क्षण को पकड़कर उसे सार्वभौमिक कैसे बना सकती है? उनकी कविताओं में उदासी की सर्द छाया भी है और उम्मीद की गुनगुनी धूप भी.वे अपने पाठकों को सतह पर ठहरने और गहराई में उतरने दोनों का अवसर एक साथ देती हैं.इन कविताओं में जीवन के जटिल अनुभव और मानवीय संवेदनाएँ एक सहज ताने-बाने में बुनी गई हैं यहाँ न अलंकारों का कोई शोर है और ना अतिव्याख्या का कहीं कोई बोझ.और उनकी कविताओं की यही सादगी बरबस हमें अपनी ओर खींचती है.

चित्रा सिंह कि कविता एक लघुचित्र की तरह हमारे सामने उपस्थित होती है उनकी कविताएँ शब्दों के सहारे जीवन के छोटे छोटे क्षणों को पकड़ने की कोशिश हैं इन कविताओं में मौन भी एक उत्सव है जो जीवन के सच से साक्षात्कार करता हुआ सा लगता है.चित्रा की कविताएँ दैनिक जीवन में घट रहे हर छोटे बड़े पलों को सहेजकर एक संजीदा कविता का रूप दे देती हैं. ये साहित्य और जीवन के बीच एक पुल की तरह हैं.ये कविताएँ केवल आत्मचिंतन ही नहीं करतीं बल्कि अपने पाठकों के भीतर आत्ममंथन के बीज बोती हुई सी लगती हैं.

चित्रा का काव्य संसार बताता है कि कविता महज शब्दों का खेल नहीं है यह जीवन के कठिनतम क्षणों को सुंदरता से रेखांकित करते हुए जीवन जीने की कला है, उनकी कविताएँ उस धूप की तरह ही हैं जो रेत पर अपने नन्हे पाँव के निशान छोड़ जाती हैं.चित्रा सिंह की कविताएँ पाठकों को भावनात्मक रूप से छूने के साथ-साथ उन्हें आत्मनिरीक्षण के लिए प्रोत्साहित भी करती हैं, यही उनके रचना संसार की सबसे बड़ी ताक़त है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी